# आरती सीता राम जी की

जयति श्रीजानकीवल्लभलाल,करुं आरती तब होऊ निहाल ।
सीस पर क्रीट मुकुट झलकें,
कपोलन पर झूलें अलकें,
कर्ण मे कर्ण फूल चमकें,
नैन कजरारे,मोहनिया डारे, सुमन रतनारे,
सोहे चंदन कुंकुम केसर भाल ।।१।।

मधुर अति मूरत स्यामल गौर,
सुछवि जोड़ी राजत इकठौर,
नहीं है उपमा कोई और,
निरखि रति लजै मैन मद तजे अंग शुभ सजे,
सोहे भूषन वर मुक्ता-मनि जाल ।।२।।

परस्पर दो चकोर, दो चंद,
प्रियाप्रिय अनुपम सुषमाकंद,
प्रेम हिय छायो परमानन्द,
मंद मृदु हसन, सचिर दुति दसन.मनोहर वसन,
दोऊं सोहें गल बहियां ड़ाल ।।३।।

बजत बीना सितार सुमृदंग,
सबै मिलि गावत सहित उमंग,
होत पुलकायमान अंग अंग,
रंग जब चढ़त,प्रेम हिय बढ़त नयन जाल कढ़त,
मधुर-स्वर गावत दै दै ताल ।।४।।

स्वामिनी स्वामि कृपा आगार,
प्रनत जनरामेश्वर आधार,
जोरि कर विनवत बारंबार,
कछू नहिं बनत, नेम-तप बरत, रहों पद निरत,
करुं तव आरती होऊ निहाल ।।५।।

## विवरण

श्री जानकी वल्लभ ( जानकी के प्रिये) ! आपकी जय हो । हम आपकी आरती कर के ही निहाल हो पाएँगें । आपके शीश पर सुन्दर मुकुट झलक रहा है एवं माथे पर आपके काले घने बाल बिखरे हुए हैं, आपके कानों में कानों के फूल (कुण्डल ) चमक रहें हैं तथा आपके कजरारे नयन मन को मोहित कर रहे हैं, आप फूलों के समान प्यारे लग रहे हैं । कुंकुम एवं केसर के चन्दन आपके माथे पर शोभित हो रहा है ।

आपकी साँवली (साँवले राम) एवं गोरी (गोरी सीता) मूरत बड़ी ही मधुर लग रही है । एक ही जगह आप लोगों की सुन्दर जोड़ी की छवि विराजित हो रही है, इनकी उपमा किसी से नहीं की जा सकती । आपके सजे हुए शुभ अंग को देखने से हमारा मन लज्जा से भर जाता है और त्यागने पर शुभ अंग देखने को मन करता है ।

आप आभूषणों मोतियों की लड़ी से सुसज्जित हो रहे हैं । परस्पर आप दोनों चकोर - चकोरी तथा चांद - चाँदनी के समान आपका फूलों के समान अनुपम एवं सुन्दर रूप हमारे हदय में प्रेम की छाया बनकर आनन्दित हो रही है ।
आपकी धीमी एवं मधुर हँसी एवं आप दोनों की सुन्दरता तथा आपके मनोहर (मन को हरने बाले) वस्त्र बड़े ही सुन्दर लग रहे हैं ।

आप दोनों एक दूसरे के गले में बाँहें डाले हुए हैं । बीणा, सितार एवं मृदंग सुन्दर ढंग से बज रहे हैं, सभी मिलकर उमंग के साथ मंगल गान गा रहे हैं तथा उनके अंग अंग खुशी के मारे पुलकित हो रहे हैं । सबके ऊपर आपके प्रेम का रंग चढ़ गया है, इसलिए हृदय का प्रेम और भी बढ़ गया है, नयनों से प्रेम की अश्रुधारा बह रही है एवं सभी ताली बजा - बजा कर मधुर स्वर में आपका गान गा रहे हैं ।

हम सबके ऊपर आप - दोनों की ही कृपा है, सम्पूर्ण जन के आप दोनों प्राणों के आधार हैं, हम दोनों हाथ जोड़कर आपकी विनती कर रहे हैं,

आपके नाम की माला जप रहे हैं, नित्य आपके कदमों में रहना चाहते हैं, इसके सिवा हमसे कुछ नही बन पा रहा है, हम आप दोनों की आरती करके ही निहाल हो जाएँगें।

---

**visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions**.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.